सृजन-समीक्षा

अंतरा शब्दशक्ति का प्रकल्प

केन्द्रीय रचनाकार

• ब्रजेश शर्मा 'विफल'

सृजक-सृजन-समीक्षा

ब्रजेश शर्मा 'विफल'

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

इंदौर,मध्यप्रदेश

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

कार्यालय: १५ नेहरु चौक वारासिवनी,जिला बालाघाट (म.प्र) ४८१३३१

शाखा: एस-२०७, नवीन भवन, इंदौर प्रेस क्लब परिसर,

इंदौर (म.प्र.) ४५२००१

दूरभाष: (कार्या.) ०७६३३-२५३१५९ (मो)९४२४७६५२५९

अणुडाक- antrashabshakti@gmail.com

अंतरताना- www.antrashabdshakti.com

मूल्य: ४०.०० रुपये

आवरण: मृदुल जोशी

मुद्रक- शैलू कम्प्युटर्स, वारासिवनी

वैधानिक चेतावनी : इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है | लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकापी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुरुत्पार्दित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता हैं| प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई हैं | अत: प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु प्रत्येक लेखक जिम्मेदार हैं | प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम ,पात्र,भाषाशैली,एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना हैं | किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं हैं |

अन्तरा-शब्दशक्ति में प्रस्तुत

"सृजक"

ब्रजेश शर्मा "विफ़ल" का परिचय

नाम: ब्रजेश शर्मा "विफ़ल"
पिता:- स्व. श्री रविदत्त शर्मा
माँ:- श्रीमति क्रांति शर्मा
सहधर्मिणी:-सीमा शर्मा
सन्तति:- पत्र मोहित ,पत्री शेफाली
वर्तमान/स्थायी पता:- 1199/1
परी इंटरनेट प्लाजा के पास,
ईसाई टोला 'दिलदार नगर -खाती बाबा
झाँसी (उ.प्र.)284003
फोन नं/वाटस एप नं/ ई मेल:- 9451171389/ 8395869358
braj.vifal4@gmail.com
शिक्षा/जन्म तिथि:- B.Sc,B.Ed, | M.A.(अँग्रेज़ी साहित्य)/01.08.1965
व्यवसाय:- भारतीय रेल में उप मुख्य टिकिट निरीक्षक के पद पर कार्य रत

प्रकाशन विवरण:- कछ साँझा काव्य संकलन " क़दमों के निशान", सत्यम प्रभात काव्योदय 1 एवम् 2
अनकहे जज़्बात

प्रकाशनाधीन:- बिखरे मोती, हिंदी भाषा सहोदरी (साँझा संकलन)

सम्मान का विवरण:- ग़ज़ल सागर झंझन् दवारा "साहित्यकार सम्मान" , दो चार और भी जुट जाते मग़र सरकार ने छुट्टी ही न दी

संस्थाओं से सम्बदधता:- राष्ट्रीय कवि संगम तथा अंतर्जाल पर कई ऑनलाइन संस्थाओं से वाबस्तगी

काव्य मंच/आकाशवाणी/दूरदर्शन/मंच पर काव्य पाठ:- जीवन्त मंच पर काव्य पाठ की कुछ प्रस्तुतियाँ

एवम् तमाम ऑन लाइन सम्मेलन में शिरक़त

तख्खलुस:- "विफ़ल"(वैसे इश्क़ की नाकामियों से इसका कुछ लेना देना नही..)

कछ और भी:-
सही मायनों में तो 26 अगस्त 65 को पैदा हआ था ।।
शायद गणना की स्विधा के लिए 1 अगस्त कर दिया गया ।।
दौर भारत पाकिस्तान के य्दध का था,, टोटल ब्लैक आउट
माँ बताती हैं अँधेरे में बहत चीखता चिल्लाता था,
तो मोमबत्ती के मदधिम प्रकाश को भी रोकने के लिए भी खिड़की दरवाजों की रन्ध्र में अखबार ठ्ंस दिए जाते ।।
बचपन अधिकतर ननिहाल में ही ग्ज़रा, नानी कच्ची ग्हस्थी छोड़कर ही परलोक गमन कर गईं थी तो माँ ने ही छोटे भाई बहनों की देखभाल की ।।
उम्र के इस दौर में आज सोचता हँ कि पापा का त्याग कितना बड़ा था,जब मैं अपनी जरा सी सविधा के मददे नज़र, अपनी पत्नि को कहीं जाने की सहज ही अन्मति नही दे पाता,तब उन्होंने अपना स्ख सहज ही त्याज्य किया ।। उनकी स्म्तियों को दिल से नमन और माँ तो माँ होती है, सन्त्लन त्याग और नेह की प्रति म्र्ति ।। 5 वीं की अर्धवार्षिक परीक्षा के बाद अकस्मात् पापा के पास ही शिफ्ट होने का प्रोग्राम बना ।।
अपने प्रधानाचार्य के शब्द मझे याद हैं ,उन्होंने नानाजी से,स्कल छोड़ते वक़्त कहा था कि शिक्षण सत्र प्र्ण करवा लेते पण्डितजी,लड़का जनपद में नाम रोशन करेगा ।। मतलब लिखा पढ़ी में बाय बर्थ होशियार था,, ये बात आज आत्म कथ्य लिखते वक़्त समझ में आई, मध्यप्रदेश और उत्तर प्रदेश के शिक्षण पैटर्न अलग थे ,सिलेबस भी अलग ।। 5 वीं की कक्षा में प्रवेश लेने के कछ अरसे बाद ही अहसास हआ कि 8वीं में पढ़ने वाली उस पड़ौसी कन्या के साथ कछ इश्क़ म्हब्बत टाइप का कछ हो गया है।। शायद मालवा की माटी में ये कीटाण् सदैव से विदयमान हैं, अन्यथा इश्क़ के उपकरण उत्तर प्रदेश के उस स्दर ग्राम मोहम्मदप्र जिला मेरठ में कछ कम न थे ।। पापा के ट्रांसफर होते रहे। दोस्त बदलते रहे,ज़िंदगी में दस्तक देने वाले चेहरे भी ।। कछ संदली ख्शब्एँ आज तक जेहन में हैं ।। कालान्तर में जाकर ये राज़ खुला कि इकतरफा इश्क़ विनष्ट ही नही करते वरन विनिर्माण भी करते हैं ।।
शौक:- बस लिखना पढ़ना और संगीत सनना, जासूसी उपन्यासों के पठन से शुरू हआ सिलसिला,श्रेष्ठतम साहित्य तक पहँचा।
उनदिनों रतलाम में बी एस सी करते वक़्त ,एक सोवियत साहित्य की दुकान हुआ

करती थी।वहाँ से लेकर दोस्तोयेव्स्की,टॉलस्टॉय, गोर्की, फेदिन म।कारेंको, फ्योदोर को ख़ब पढ़ा ।। गोर्की की आत्मकथा ने सिखाया विपरीत परिस्थितियां आपके सब्र का इम्तिहाँ लेने आती हैं ।।अन्ना केरेनिना को पढ़ना प्रेम की मलभत अवधारणाओं का बदल जाना था गोर्की की *माँ* ने भीतर की समस्त चिढ,कढ़न और अवसाद को तिरोहित कर सिखाया माँ प्रकृति की अदभत देन है।। मंशी प्रेमचन्द का हामिद आज भी आँखों के सम्मख कन्धे पर चिमटा लिए खड़ा है।। प्रसाद का छोटा जादगर आज भी तिरस्कार की मद्रा **न क्यूँ आता?** सनातन प्रश्न लिए सम्मख है। सनातन प्रेम के आख्यान का अनगढ़ प्रश्न ***तेरी कुड़माई हो गयी??*** अपने अँधेरे उजालों के साथ मेरे संग है।
शरद की तमाम नायिकाएं अपने सम्पर्ण समर्पण की ताब लिए ज़ेहन में टँगी हैं। महाप्राण निराला ,महादेवी वर्मा, आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ,यशपाल, स्वामी विवेकानन्द ,ओशो,विमल मित्र ,रांगेय राघव, टैगोर
वृंदावन लाल वर्मा सब मेरे जनन से होकर गज़रे हैं । चलती ट्रेन में पढ़ने से लेकर मानिकपर के रेस्ट हाऊस का अकेलापन मेरे इस जनन का गवाह है ।
अपने बॉस ,माँ और सहधर्मिणी की घड़कियाँ भी निर्लिप्त भाव से स्वीकार की हैं। अंग्रेजी में भले ही हाथ तंग हो मगर मिल्टन ,कीटस ,वर्डसवर्थ, शैली, शेक्सपियर, डिकेन्स,इलियटआदि पर भी हाथ आजमाने का बेजा प्रयास किया है । हाँ एक विशेष बात पढ़ने के इस दौर में लिखा कछ नही। पिछले 3 4 सालों से फिर लिखना शरू किया तो,, पढ़ना लगभग छट सा गया है । कब से लिखना शुरू किया:- शायद 81-82का साल रहा होगा जब किसी कोमल अहसास ने एक दफा फिर दस्तक दी।
भावों ने शब्दों के वस्त्र पहनना शरू किये, मिलना बिछड़ना जीवन का शाश्वत नियम है, 3 साल दो इश्क़ बी एस सी की अंतिम वर्ष इसी इश्क़ मश्क़ की बलिवेदी पर चढ़ गया । ख़ब लानत मलानत हई । दिल विछोह से टटा सो लुभाव में लेखन स्वान्त सखाय किस्म का ही रहा.. मल में बीज जो भी रहे हों।
ग़ज़ल ,गीत, अतकान्त... कछ भावों के अनवर्ती रहे ।।
कुछ मित्रों के आग्रह पर छिटपुट छपा भी ....

क्यूँ लिखता हँ?:-
बस अनायास कोई भाव दस्तक दे या कछ उद्वेलित करे।।
कछ सदायें अक्सर रूह तक पहुँचती हैं।।
अपनी ही बात कहँ तो....
"देखता हँ मैं ज़र्रे ज़र्रे में ख़ुदा,
मेरा बाग़बाने अज़ल,

पत्थरों तक महदद नही"
और उतना ही सच ये भी कि,
हमारे खूबसूरत उदगार दर्द की ज़मीं से उत्पन्न होते हैं।।।
ज़िन्दगी का बहुत सीधा सा फण्डा है...
न आहें भरो,
न आंसू बहाओ,
अँधेरा मिटेगा,
दिया तो जलाओ ।।।

पसन्द है:- हर लम्हे को उसी रूप में जी लेना जैसा वो सामने आता है।। घनघोर आशावादी काँटों में फूल देखने का आदि ....क्योंकि ज़िन्दगी न मिलेगी दोबारा .... काव्य या अदब के वैयाकरणिक नियमो का कोई ज्ञान नही बस यूँ कुछ उल्टा सीधा लिख लेता हूँ।। आप मित्रों का स्नेह जहां मायने रखता हो...
मेरे लिए फिर सब बेमानी हो जाता है।।क्योंकिं मुझे हमेशा महसूस हुआ है,
जीवन खोने पाने के किसी दुर्लभ संयोग का नाम है।

विशेष:- आभारी हूँ आभासी दुनिया के इस अदभुत तिलिस्म के जिसने कुछ मन और रूह के रिश्तों की भी तामीर की, ग़ज़ल गुरु विजय स्वर्णकार, छंद सम्राट शैलेन्द्र सोम
संजीव समर्थ , संजय उमंग विशेष प्रतिभा के धनी अनिल अनन्त,
श्रीमनचारिविराट, राजेश प्रखर मित्र बीना शर्मा, प्रीति सुराणा, शालिनी श्रीवास्तव महेश जोशी भाई जी
आ रामरिया जी,अरुण विज्ञ जी,पूजा कनुप्रिया,पूजा बंसल,कुमुद साहा,सूरज परिहार,रोहिताश्व,विनोद कुमार,विनोद मानस,काव्योदय प्रमुख मणि बन्धु उदय और कपिल जी,अनुज ऋषि अग्रवाल,ये सब ऐसे नाम हैं जो आभासी दुनिया के वास्तविक प्रतिबिंब हैं ।।
मेरे दिल के बेहद क़रीब सहकर्मी मित्र डॉ रवि शाक्या का भी दिल से आभार मुख्य धारा में खींच लाने के लिए विशेष आभार मित्र वसु और बीना जी का जो मेरे सृजन की मौलिकताओं की ज़ामिन हैं ।। और उनमे सुधार और सम्भावनाओं के फलाफल की गवाह भी ।।

चलते 2:- सभी दोस्तों के नाम
हैरतों के सिलसिले सोज़े निहाँ तक आ गये,
हम तो दिल तक चाहते थे तुम तो जाँ तक आ गये ।।

"सृजक का सृजन"

बस यही अपनी इबादत दोस्तों

देख ली उनकी शराफ़त दोस्तों ।
अब नही कोई शिकायत दोस्तों ।।

माँ के आँचल में सदा खशियां रहे ।
बस यही अपनी इबादत दोस्तों ।।

कछ ख़ता मझसे भी शायद हो गई,
वर्ना क्यों इतनी अदावत दोस्तों ।।

रिश्ते सब अहसास की ही देन हैं.
व्यर्थ हैं ये सब तिज़ारत दोस्तों ।।

घर थका हारा मैं लौटा जब कभी ।
जी उठी माँ की मुहब्बत दोस्तों ।।

गाँव के मंजर भी हैं बदले हए
अब कहाँ कच्ची इमारत दोस्तों ।।

जिसका मन संवेदना से शन्य है ।
फ़ालतू उनकी ज़ियारत दोस्तों ।।

बेनवाँ हो वो भी आयें बज्म में ।
एक दिन हो ये कयामत दोस्तों ।।

तम चलो हामी नही हो इश्क़ के
प्रेम तो अपनी रवायत दोस्तों ।।

उम्र भर जिनके उठाये बोझ. क्यँ??
उन निगाहों में हिक़ारत दोस्तों ।।

फूल तितलियाँ काँटे शबनम

तुझमें मैंने क्या क्या पाया आज वो सारी बात लिखूँ ।।
फूल तितलियाँ कांटे शबनम तारों वाली रात लिखूँ ।।

तेरी मुस्कानों में जैसे हरसिंगार मिला करते हैं ,
तेरे आलिंगन जाड़ों में गर्म धूप हुआ करते हैं,
अधरों की मृदुता में जैसे कमल नील खिला करते हैं ,

तेरी आँखों के अश्क़ों को रिमझिम सी बरसात लिखूँ ।।
फूल तितलियाँ कांटे शबनम.....

तेरी आहट जैसे पतझड़ में आई हुई बहार है,
तेरी हँसी जैसे निर्झर की दूधिया सी धार है,
तेरे मुखड़े की आभा चन्द्र किरण आगार है,

तेरे ख्वाबों को जीवन में मौसम की सौगात लिखूँ ।।
फूल तितलियाँ काँटे शबनम....

सरहद

खड़ा सरहद पे' हूँ जब जब मुझे दीवार लिख देना ।
निशानी हूँ अमन की मैं भले अंगार लिख देना ।।

गिराकर अपनी' पलकों को बहाना प्यार के आँसू ।
मेरे माथे पे तुम मेरे वतन का प्यार लिख देना ।।

मैं'तुमको याद करता हूँ यही मेरी हक़ीक़त है ।
बुलाकर मुझको' ख़्वाबों में कोई इक़रार लिख देना ।।

किनारों से रहे हो तुम मैं' बहती धार नदिया की ।
समन्दर को मे'री साँसों का' तुम आगार लिख देना ।।

वो' होके आइना कैसे रहेगा अंधी' बस्ती में ।
सियासत को फ़क़त झूठों का' ही घर बार लिख देना ।।

नारी शक्ति को नमन करूँ ....

भोर से लेकर रात ढ़ले दूजों की ख़ातिर जीती है ।।
नारी शक्ति को नमन करूँ मेरी अभिलाषा कहती है ।।

जिसकी आँखों में सपने हैं घर परिवार सजाने को,
जिसके श्रम सीकर सारे हैं इक दुनिया नई बसाने को,
जिसके होठों पर मनुहारें बस रूठे सुजन मनाने को ,
मुस्कान लिए अमृत बाँटे हरदम
गरल जो पीती है ।।
नारी शक्ति को नमन करूँ ....

अम्बर तक भी जिसने अपने क़दमों से है नाप लिया ,
और मिजाज़ समन्दर की लहरों तक का भाँप लिया ,
औरों को जीवन देने में मरणांतक सन्ताप लिया ।।
अपने जज़्बातों की कथरी भी जो अश्कों से सीती है ।।
नारी शक्ति को नमन करूँ ...

कुछ उनकी भी सोचें हम; अस्मिता का सम्मान करें,
स्नेह प्रेम विश्वास दे उनको हरगिज़ न अपमान करें,
बेटियाँ भी जीवन की धुरी है उनका भी अरमान करें ।।
महसूस करो नारी जीवन ज्यूँ मन्द बयार सी बहती है ।
नारी शक्ति को नमन करूँ मेरी....

मजबूरी

कुछ उनकी भी बंदिश यारों कुछ अपनी भी मजबूरी ।।
कुछ आँसू दामन से लिपटे पर मुस्कानें कस्तूरी ।।

अधरों पर मैं जब जब लिखता अपने अंतर के मौसम ।।
तब तब शाम शहर की तेरे हो जाती है सिंदूरी ।।

मैं अपनी पीड़ाएँ नित नित क्यूँ औरों पर जा थोपूँ ।।
नैश तिमिर के आराधन जब दिन हों कैसे कर्पूरी ।।

भान नही मर्यादाओं का आँखों में मक्कारी सी ।।
गंगाजल विष है उनको जो पानी पीते अंगूरी ।।

सफ़र अधूरे, प्रीत पराई हर शय में है रीतापन ।।
कौन यहाँ पर तय कर पाया दिल से दिल की ये दूरी ।।

आओ फिर से नाम तुम्हारे लिख दूँ मैं पैग़ाम नया ।।
अंतर्मन को जो छू जाये अभिलाषाएं हों पूरी ।।

अफ़साना

इश्क़ में तेरे जो भी गाया हर अफ़साना भूल गए,
खुद को तेरे वादों की फिर याद दिलाना भूल गए,

ज़र्रा ज़र्रा बारूदी हर सिम्त हैं नफरत के सामाँ,
मेरे आँसू मेरी आहें ठौर ठिकाना भूल गए !!

चढ़ते सूरज के दिन हों या घोर अमावस की रातें,
ऐसे उलझे कि किस्मत का हर नज़राना भूल गए ।।

हमने उनसे बयाँ किया वो सब जो ग़ैर ज़रुरी था ,,
अपने भीतर जो वाज़िब था हम समझाना भूल गए ।।

तेरी ख़ुशबु से ज़िंदा हैं मैं और मेरी तन्हाई,
बातों ही बातों से खुद को अब बहलाना भूल गए ।

सीख लिए हैं तुमने भी अंदाज़ सियासत के जानाँ,
जो मेरे ख्वाबों में भी तुम आना जाना भूल गये ।।

नीली आँखों वाली लड़की मोर पंख सी इक हसरत ,
गाँव गली के चौबारे बचपन का ज़माना भूल गये

बिन तुम्हारे

बिन तुम्हारे यादों का मन्ज़र हर इक वीरान है,
रास्ते सब खोये खोये हर गली सुनसान है ।।

आज सब बातें जुदा न जीत है न हार है,
नेह की कितनी अनूठी सी वो इक रसधार है,
हर तरफ बिखरा हूआ यादों हरसिंगार है,
प्रेम मीरा और मोहन की भी तो पहचान है ।।
बिन तुम्हारे यादों का मन्ज़र हर इक वीरान है ।।

याद आता है मुझे वो छत पे आ जाना तेरा,
दूर से ही देखना और यूँ ही शरमाना तेरा,
और साये की तरह मुझमे समा जाना तेरा ,
नाम ही तेरा मेरी जाँ खुशियों का उन्वान है ।।
रास्ते सब खोये खोये हर गली सुनसान है ।।

स्वप्न चाँदनी खुशबु बादल और तन्हा सी रातों में ,
डूब ही जाता था मैं अक्सर झील सी गहरी आँखों में ,
कटता था सब वक़्त उन दिनों बस बातों ही बातों में ,
दर्द से मेरे यहाँ तो जानाँ शख़्स हर अंजान है ।।

लौट कर आते हैं कब गुज़रे हूए लम्हात वो,
बेर इमली कंचे लट्टू क्या 2 तेरी सौगात वो,
सीली हूई बातें कभी भीगे हूए जज़्बात वो ,
ओ प्रिये !! फिर आज तेरी यादों को आव्हान है ।।
बिन तुम्हारे यादों का मन्ज़र हर इक वीरान है ।।

"सृजन की समीक्षा"

1.

आदरणीय ब्रजेश जी ,,,,

मैं अंतरा से अभी नयी ही जुडी हूँ,अतः आप सबसे भी नया ही परिचय है,पर जितना भी आपको पढा है, अत्यंत ही भाव उद्वेलित करने की क्षमता रखता है, मन को बाहर से ही नही छूता अंतः तक उतर जाता है|

आपका आत्म परिचय,मानो आप सामने बैठ कर ही बात कर रहे हैं,कहीं कहीं तो लगा आप हमारी बात कर रहे हैं,कई कवियों, लेखकों का हमारे जीवन का हिस्सा हो जाना,लहना सिंह से भावभीनी मुलाकात,छायावादी कवियों का प्रभाव, इत्यादि सब अपना ही लगा|

आपकी गजल गोई, आपका गीत, तारों वाली रात लिखूं, एक सैनिक की नजर से,,मेरे वतन का प्यार लिख देना, और सर्वभूत,नारी शक्ति को नमन, मे एक पुत्र, पति, और सहृदय पिता मूर्तिमान हो उठा, साधुवाद|

इश्क का इज़हार और दर्दे जुदाई, बाकमाल , पेश किये हैं, हर गली सुनसान है,,,,,बहुत ही उम्दा रचनाएँ,,, आपको बार बार पढने को जी चाहता है आज की प्रस्तुति सहेज कर रखने योग्य |हम तो दिल तक चाहते थे,तुम तो जां तक आ गए नमन |

सुनीता लुल्ला

2.

सम्मानीय ब्रजेश शर्माजी का आत्मकथ्य ही इतना मनोहारी था जिसे बार बार पढ़ने को जी करता है ,समस्त सहित्य सागर मे गोते लगवा दिये ,कहीं गोर्की ,प्रेमचंद जैसे मोती मिले ,कहीं प्रसाद,निराला जैसे रत्न बस उन सबको समेटने का ही दिल करता रहा।

आपने एक कहावत को गलत साबित कर दिया कि नाम का जीवन पर बह्त असर होता है,.. **यहाँ आप विफल होते हुये भी सफल है** । सभी रचनायें बेजोड़ व अविस्मरणीय,....

कीर्ति वर्मा

3.

विफल जी बड़े रोचक अंदाज सेदियेगएआपके परिचय को पढ़ने का सौभाग्य मिला ।मै साहित्य जगत में लगभग नई हूँ ।समीक्षा की हैसियत तो नहीं फिर भी आपको पढने के बाद जो अन्भूत किया अंतरा के धर्मान्सार उसे साझा जरूर करूँगी । परिचय की ट्रेन कहीं कहीं पैसिंजर लगी । **माँ के आँचल में सदा खुशियाँ रहेबस यही अपनी इबादत दोस्तों ।बह्त खूब । तेरी म्स्कानों में जैसे हरसिंगार मिला करतेहैं । सियासत को फ़क़त झूठों का ही घरबार लिख देना। (बह्त बढ़िया) नैश तिमिर के आराधन जब दिन हों कैसे कर्पूरी** । वाह क्या बात है। सभी रचनाएँ आनंद दे गईं । बहुत उत्तम।

वंदना दुबे

4.

आब्रजेश जी आप ने आत्म परिचय मै आत्मा को भी साक्षी बना दिया । .

आप का ऐक ऐक शब्द प्रेरणा लगता है । आप की सफलता आप के आशा वादी होने के कारण

ही है । मैने सुना है की लुडकते हुये पत्थर मे काई नही लगती ।
आप इसका उम्दा उदाहरण है ।
विफलता से सफलता का सफर यकीनन बहुत दुखद रहा होगा ।आप की रचना ।
फूल तितलियाँ काँटे शबनम बाली रात लिखूँ मन को छू गई ।
आप के धैर्य आप के पराक्रम को नमन एंव सुन्दर सुखद जीवन की शुभकामनाएँ ।
आभा अनामिका मंडला

5.

जिनका मन संवेदना से शून्य........फालतू उनकी...जियारत...
आडम्बर और पाखण्ड पर अच्छा प्रहार किया है आपने सभी शेर बहुत उम्दा
खड़ा सरहद परदेश के प्रति समर्पण...... मुस्कान लिए अम्रत बाँटे उत्तम है इस तरह सभी... रचनाएँ तलस्पर्शी हैं,..
ब्रजेश जी इस तरह आप पूरी तरह सफल हैं लेकिन हाँ सागर की सीमा कौन नापे इसलिए सफलता के सोपान और चड़ना है इसलिएशायद आप विफल लिखते हैं.
मैंने अपनी माँ रचना १००८) पंक्ति की प्रकाशितमे यही बात कहने का प्रयास किया है कि (
मुझे कवि लेखक कोई समझे माँ
तो व्यर्थ प्रपंच मे उलझे माँ
क्योंकि कवि तो वो ही होता माँ
जो अंतर मे लगाकर गोता माँ
जीवन मे अमरत्व को भरदे माँ
अतः अभी यात्रा अधूरी माँ
पर तेरी कृपा से होगी पूरी माँब्रजेश जी मे हमेशा कहता हुँ मे समीक्षक नही फिर भी मंचीय...... दायित्व मात्र निभाया
अंत मे अनेक अनेक शुभकामनाओं के साथ...
राजेन्द्र जैन अनेकान्त

6..

कवि ब्रजेश जी को बधाई होआदरणीय विफल जी को यूँ तो इतने दिनों से बराबर पढ रही हूँ सभी रचनाओं उनकी सजग टिप्पणी पटल और साहित्य क्षेत्र में उनकी जिम्मेदार छवि प्रस्तुत करती है विधा ....आपकी सभी रचनाएँ विशेष रूप से गजलें ...., विषय के साथ साथ भावों पर भी आपकी गहरी पकड को दर्शाती हैं ।
आपने अपने आपको किसी एक काव्य विधा तक सीमित न रखते हुए रचनाधर्मिता के विविध आयामों
को छूआ है आपके आत्मकथ्य की रोचकता....., ईमानदारी व भावनात्मक प्रवाह को देख कर ये बात भी दावे के साथ कही जा सकती है कि यदि विफल जी गद्य में हाथ आजमाएं तो भी सफल ही साबित होंगे । शुभकामनाओं सहित ...
सीमा 'असीम'

7.
ब्रजेश शर्मा जी सफल है आप विफल नही
पहली रचना से लेकर आठवीं रचना तक आपकी साहित्यिक साधना और लेखनी का चमत्कार दिखा
आप एक सच्चे साधक है
हर रचना अपना एक उदाहरण पेश कर रही थी
दोस्तों की दोस्ती को भी आपने उल्लेखित किया
आपकी सृजनशीलता को नमन
आपके भावपक्ष को नमन
आपके आत्मविश्वास को नमन
आपने इतनी बढिया रचनाओं को पढने का मोका दिया उसके लिए नमन
आपकी कलम सदा सार्थकता से अनवरत सृजन करती रहे यही दुआ है मेरी
अनंत अनंत बधाई आपको
कैलाश सोनी सार्थक
8.
सबसे पहले तो आदरणीय विफल जी की साधना को नमन।आपने जैसा कि अपनी आत्मकथा में बताया कि अपने को स्वाध्याय एवं साहित्य के लिए पूरी तरह समर्पित कर दिया है।
अतः आप का साहित्य न केवल अनुभव की चाशनी में डूब कर लिखा हुआ है बल्कि अनुभूतियों और सम्वेदनाओं का खजाना है।
रेलवे की व्यस्तता पूर्वक सेवा के बावजूद आप का निरन्तर लेखन आपके साहित्य के प्रति जूनून को प्रदर्शित करता है।
अंतरा के पटल पर एक अच्छी श्रुआत हुई है।
समस्त टीम को बहूत बहुत बधाई।
अजय जादौन अर्पण
9..
ब्रजेश शर्मा विफल जी का आत्मकथ्य बहृत ही सुन्दर एवं विस्तृत परिचय का अन्दाज अत्यन्त प्रभावशाली है । साहित्य लेखन की प्रेरणा एवं कारकों से हम परिचित होते हैं।
"क्यों लिखता हूँ बस अनायास कोई भाव-" दस्तक दे या उद्वेलित करे यही तो है जो पाठक-को साहित्य से जोड़ता है ।सायास सृजन इतना प्रभावशाली नहीं हो सकता ।विफल जी की रचनाऐं हृदयग्राही हैं ।वे जो विषय लेते हैं उसे पूरी ईमानदारी के साथ शब्दों में ढालते हैं ।यथा-मात्र कविता नहीं उनके मन में नारी के प्रति सम्मान की वह-"नारी शक्ति को नमन करूँ" भावना है जो उनके आत्मकथ्य में भी माँ एवं पत्नी के प्रति भी दृष्टव्य हैं ।
डा चन्द्रकान्ति त्रिपाठी

अन्तरा-शब्दशक्ति के व्हाट्सअप एवं फेसबुक समूह में १३ नवम्बर २०१६ दिन रविवार से हर रविवार को 'सृजक-सृजन-समीक्षा विशेषांक' आरम्भ किया गया जिसमें 'सृजक' का परिचय, 'सृजक का सृजन' और पाठकों की भूमिका में समूह के अन्य सभी सदस्यों द्वारा की गई 'सृजन की समीक्षा' को अन्तरा-शब्दशक्ति के फेसबुक पेज और समूह पर सहेजा गया है। अब तक वरिष्ठ और नवोदित रचनाकारों सहित लगभग ६५ रचनाकारों को प्रस्तुत किया जा चुका है और आगे भी गतिविधि सतत क्रियान्वित है।

'सृजन-समीक्षा' एक प्रयास है 'सृजक के सृजन को समीक्षा सहित' पाठकों तक वेबसाइट पर ईबुक और मुद्रित पुस्तकों के माध्यम में महत्वपूर्ण दस्तावेज की तरह सहेजने का। आशा है यह महत्वपूर्ण दस्तावेज सृजक और साहित्य जगत दोनों के लिए अनमोल धरोहर बनेगा। अनंत शुभकामनाओं सहित।

डॉ. प्रीति सुराना

यदि आप अंग्रेजी में हस्ताक्षर करते हैं तो निवेदन है कि 'हिन्दी में हस्ताक्षर करें', आपकी यह छोटी-सी कोशिश हिन्दी को राजभाषा से राष्ट्रभाषा बनाने में अमूल्य योगदान देगी।

सहयोगी संस्थान

हिन्दीग्राम भाषा समन्वयक
www.hindigram.com

मातृभाषा उन्नयन संस्थान (पंजी.)
हिंदी भाषा के विकास हेतु प्रतिबद्ध
www.matrubhashaa.org

मातृभाषा वैचारिक महाकुम्भ
www.matrubhashaa.com

अंतरा शब्दशक्ति प्रकाशन

१५ नेहरू चौक, मेन रोड वारासिवनी, जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१

संपर्क: ९४२४७६५२५९ । अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com

अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com